कीन्स का रोजगार सिद्धान्त :– *Keynesian theory of Employment-*

The Keynesian Revolution

Now 'in the long run' this [the quantity theory of money] *is probably true ... . But this "long run" is a misleading guide to current affairs.* ***"In the long run" we are all dead.*** *Economists set themselves too easy, too useless a task if in tempestuous seasons they can only tell us that when the storm is long past the ocean is flat again.*

A Tract on Monetary Reform (1923)

कीन्स का रोजगार सिद्धान्त क्लैसिकल रोजगार सिद्धान्त के आलोचनात्मक रूप में आया है ! 1936 में General theory of Employment, Interest and money * प्रकाशित होती है !कीन्स ने स्पष्ट किया कि

1– सरकारी हस्तक्षेपक नीतियां कार्य करेंगी

2– अर्थव्यवस्था सदैव अल्पकाल में होगी

3– बाजार यन्त्रों में कठोरता होगी

4– अर्थव्यवस्था सदैव पूर्ण रोजगार में ही संतुलन को नही प्राप्त करेगी

5– मन्दी के कारण पूर्ति की पूर्ण अनुक्रियां होगी , अर्थात पूर्ति पूर्णतया लोचदार है प्रभावी मांग में वृद्धि करना ही प्रमुख उद्देश्य है!

6– पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति पायी जाती है।

उपर्युक्त स्थिति के आधार पर रोजगार का वह स्तर जहां पर समग्र मांग समग्र पूर्ति के बराबर हो और वास्तविक मांग भी उसी स्तर पर बराबर हो , निष्चित रूप से अर्थव्यवस्था संतुलन में होगी !

समग्र मांग :– Agreegate Demand :– अल्पकाल में उत्पादन की क्षमता ,आय एवं रोजगार की मात्रा साहसी की विक्रय प्रत्याशा पर निर्भर करेगी और विक्रय प्रत्याशा ही समग्र मांग है ! समग्र मांग अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण व्यय को प्रदर्शित करता है AD = f (N), N = No. OF LABOUR

समग्र पूर्ति :– Agreegate Supply उत्पादित वस्तुओं के विक्रय से प्राप्त आय की न्यूनतम मात्रा जो रोजगार के एक दिये हुए स्तर पर साहसियों को प्राप्त होना चाहिए ! अर्थात न्यूनतम प्रत्याशित आय ही समग्र पूर्ति है ! जो अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण उत्पादन को प्रदर्शित करता है ! AS = f (N) N = N0. OF LABOUR

प्रभावी मांग :– Effetive Demand :–

रोजगार का वह स्तर जहां पर समग्र मांग समग्र पूर्ति के बराबर हो वास्तविक मांग भी बराबर हों निष्चित रूप संस्थिति बिन्दु ही **प्रभावी मांग** है! प्रभावी मांग को निम्न कारक प्रभावित कर सकते है !

1– घरेलू क्षेत्र का उपभोग व्यय → C

2– व्ययपारिक क्षेत्र का निवेशव्यय → I

3– सरकार का समग्र व्यय → G

4– निबल निर्यात → (X - M)

कीन्सीय सिद्धान्त में कीमत को स्थिर मान लिया गया है (P=1) है! और पूर्ण रोजगार के पूर्व समग्र पूर्ति वक्र पूर्णतया लोचदार होगी और पूर्ण रोजगार स्तर पर यह पूर्णतया बेलोच हो जायेगा ! रेखाचित्र में समग्र पूर्ति का PE भाग कीन्सीय क्षेत्र है जब कि समग्र पूर्ति का $Y_f E A_S$ भाग क्लैसिकल है

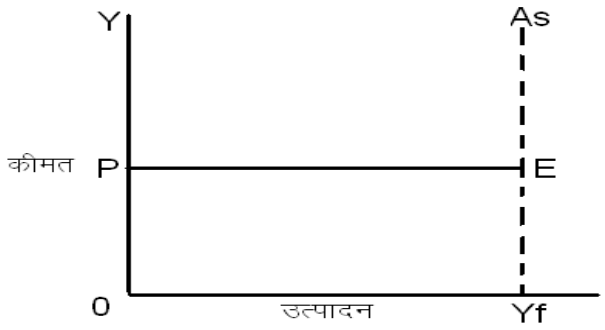

रेखाचित्र A में A बिन्दु पर संतुलन है पर पूर्ण रोजगार का स्तर OY_F है बिन्दु A के बाद आय और व्यय के बीच अन्तराल बढता जायेगा और संतुलन के लिए इस अन्तराल को समाप्त करना होगा – चाहे निवेश में वृद्धि या रोजगार में कमी द्वारा!

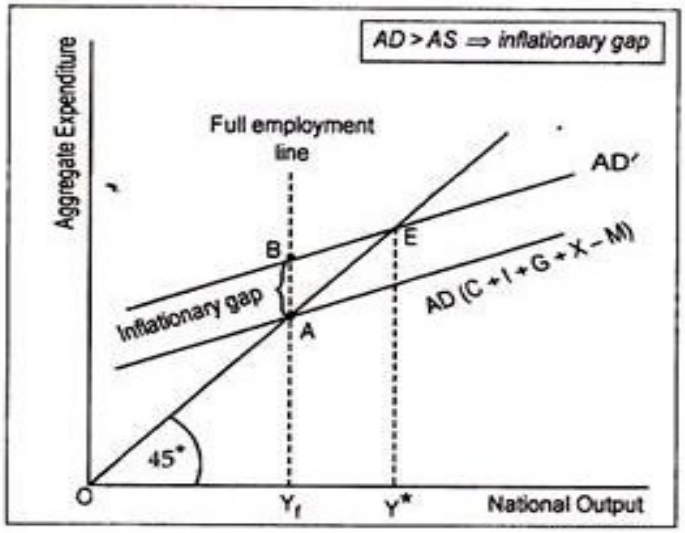

दो क्षेत्रीय मांडल –

दो क्षेत्रीय मांडल में अर्थव्यवस्था की संस्थिति तब होगी जब समग्र उत्पाद = समग्र मांग , नियोजित बचत = नियोजित विनियोग हो ।

यदि समग्र पूर्ति > समग्र मांग – तो निश्चित रूप सें अर्थव्यवस्था में न बिका स्टाक (ΔIn +ve) होगा ऐसी स्थिति में श्रम की पूर्ति में कमी के कारण उत्पादन में कमी होगी परिणाम स्वरूप नियोजित समग्र मांग वास्तविक समग्र पूर्ति के बराबर होगी !

यदि समग्र पूति < समग्र मांग – उपभोक्ता उतना क्रय नही कर सकेगें जितना की उन्होने नियोजित किया था !

अतः संस्थिति तभी सम्भव है जब कि न बिके स्टाक में परिवर्तन 0 शून्य हो तथा नियोजित मांग वास्तविक पूर्ति के बराबर हो अर्थात $Y = C + I + \Delta In = (0)$

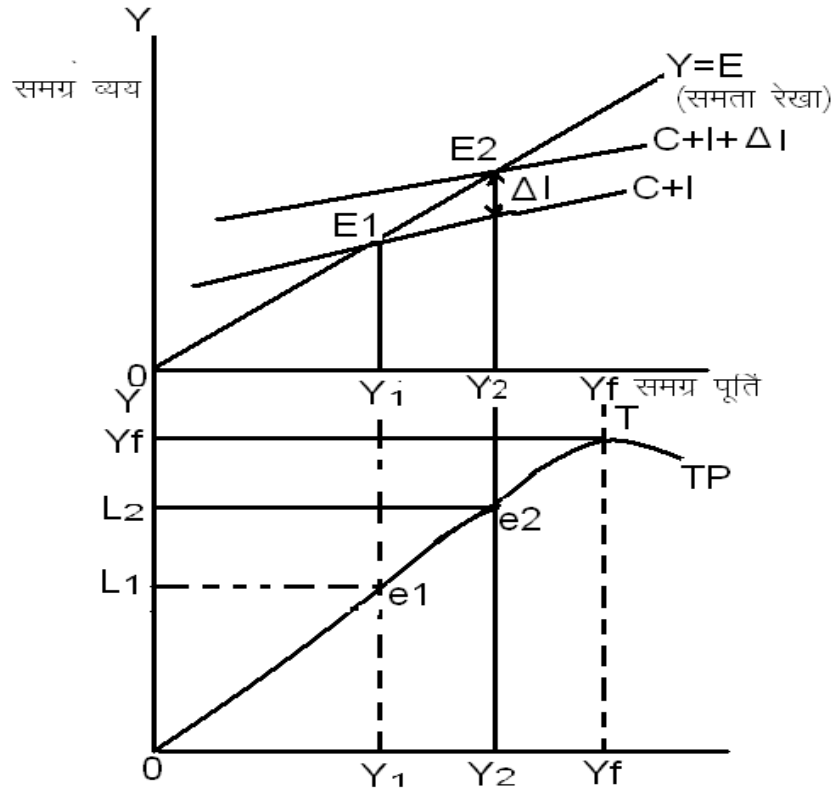

रेखाचित्र में $Y_1 = C + I$ संतुलन की स्थिति है यदि उत्पादन का स्तर Y_2 हो तो निश्चित रूप सें Δ In(+) होगा इसे शून्य करने के लिए रोजगार में कमी या निवेश में वृद्धि किया जाये ! कीन्स के अनुसार निवेश में वृद्धि का रास्ता ज्यादा अच्छा होगा

$$Y_2 = C + I + \Delta I$$

अतः अर्थव्यवस्था E_2 पर संतुलन में है जहां पर रोजगार में वृद्धि L_1L_2 के बराबर होगी पर अभी भी अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार नही है!